''हरित क्रान्ति के पश्चात् हरियाणा के ग्रामीण समाज में आर्थिक परिवर्तनों का महिलाओं की निजी स्वतंत्रता पर प्रभाव – झज्जर जिले के पांच गाँव का अध्ययन''

Meena, Indira Gandhi National Open University, New Delhi

यह शोध पत्र विशेष रूप से, हरित क्रान्ति के पश्चात् हरियाणा के ग्रामीण समाज में आए सामाजिक एवम् आर्थिक परिवर्तनों का महिलाओं के निजी जीवन पर प्रभाव व बदलाव से सम्बन्धित विषयों पर प्रकाश डालना है, और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तरों को ढूँढना है–

- हरित क्रान्ति के पश्चात् हरियाणा के ग्रामीण समाज में महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति में क्या परिवर्त्तन आए हैं?
- हरियाणा के ग्रामीण समाज में हरित क्रान्ति के पश्चात् महिलाओं की शिक्षा का स्तर क्या है व लिंग अनुपात किस प्रकार प्रभावित हुआ है?
- महिलाओं की निजी स्वतंत्रता व राजनीति में भागीदारी में बदलाव?

शोध प्रविधि और स्रोत

इस शोध पत्र हेतु मैंने झज्जर जिले के पाँचों गाँवों (बादली, पासौर, फैजाबाद, याकुबपुर, दादरी तोय और फतेहपुर) स्वयं जाकर फील्ड वर्क व तथ्यों को इकट्ठा किया है और साक्षात्कार की सहायता से लोगों से जानकारी प्राप्त की है।

इस शोध पत्र में प्राथमिक व द्वितीयक दोनों ही प्रकार के स्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत फील्ड वर्क और साक्षात्कार के माध्यम से सभी आंकड़े एकत्रित किये गये हैं और द्वितीयक स्रोतों में पुस्तकें, जर्नल, मैगजीन, समाचार–पत्रों व इंटरनेट और राजनीतिक दलों के घोषणा पत्रों व अन्य दस्तावेजों की सहायता ली है। इसके अतिरिक्त विभिन्न राजनैतिक दलों

व सरकारी व गैर–सरकारी संगठनों से प्राप्त जानकारी सम्मिलित की है। अतः इस शोध में मैंने स्तरीकृत निदर्शन (Stratified Sampling) का प्रयोग किया है।

परिचय

हरित क्रान्ति के पश्चात् हरियाणा में सामाजिक व आर्थिक बदलाव आए, इन बदलाव ने समाज में रहने वाले सभी वर्गों, जातियों को भी प्रभावित किया है। हरियाणा के ग्रामीण सामाजिक संरचना इस प्रकार से हुई है कि, समाज का आर्थिक स्तर अत्यधिक बढ़ने से, उनके रहन–सहन में परिवर्तन देखे गये हैं परन्तु महिलाओं की निजी स्वतंत्रता व निर्णय लेने इत्यादि में बदलाव अधिक नहीं देखे गये हैं। हरियाणा एक पुरुषप्रधान व पितृसत्तात्मक राज्य है। जहाँ महिलाओं को अपने जीवन से संबंधी महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार ना के बराबर है। ग्रामीण समाज में रहने वाला कृषक वर्ग का भी आर्थिक स्तर अत्यधिक बढ़ गया है। जिसने समाज में रहने वाले अन्य वर्गों को भी प्रभावित किया है। ग्रामीण समाज में रहने वाला कृषक वर्ग सम्पन्न हो गया है और जीवन का सरल व आधुनिक बनाने वाली सभी सुख–सुविधएँ उसके पास मौजूद है। समाज में आर्थिक मजबूती आने से महिलाओं के जीवन में भी परिवर्तन आया है।

(क) हरित क्रान्ति के पश्चात् हरियाणा के ग्रामीण समाज में महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति

हरित क्रान्ति से निश्चित तौर पर समाज में रहने वाले सभी वर्ग, जाति इत्यादि प्रभावित हुए हैं। उनके सामाजिक जीवन में भी अधिक परिवर्तन देखे गये हैं। लेकिन महिलाओं की स्थिति में अधिक परिवर्तन नहीं आए हैं। खासतौर पर ग्रामीण समाज की कृषक वर्ग से सम्बंधित महिलाओं का आर्थिक स्तर तो निश्चित तौर पर बढ़ा है, रहने के लिए बड़े–बड़े आलिसान घरों व

बंगलों का निर्माण हुआ है तथा जीवन को अधिक सरल बनाने के लिए बड़ी–बड़ी गाड़ियां इत्यादि अधिकतर लोगों के पास पाई जाती है। हरियाणा समाज के ग्रामीण वर्ग के कृषक परिवारों की अधिकतर भूमि, भूमि अधिग्रहण के अन्तर्गत आने से निम्न मध्यम स्तरीय कृषक परिवार, उच्चतम मध्यमीय वर्ग में शामिल हो गया है जिससे समाज में कृषक वर्ग का स्तर अन्य वर्गों से अधिक बढ़ गया है। उच्च वर्गों की महिलाओं की बजाय, समाज में रहने वाली निम्न वर्ग की महिलाएं अधिक स्वतंत्र हैं। उच्च वर्ग (कृषक वर्ग) का आर्थिक स्तर बढ़ने से, प्रतिष्ठा व सम्मान का मुद्दा जुड़ गया है, **''बड़े घरों की औरतें बाहर नहीं जाया करती''** की कहावत बन गई है। पहले जो कृषक वर्ग के समाज की महिलाएँ कृषि के लिए खेतों में जाया करती थी, परन्तु अब उन्हें घरों में ही सभी सुख–सुविधाएं उपलब्ध होने लग गई है। तो इसी कारण से पुरुष वर्ग अपने घर की महिलाओं को कार्य करने व निम्न वर्ग की महिलाओं के साथ मेलजोल बढ़ाने पर प्रतिबन्ध लगाया जाता है।

खाप (स्वयंसेवी संस्था)

हरियाणा समाज में महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाने से यहां का स्थानीय पुरुषप्रधान व पैतृक मानसिकता तथा स्वयंसेवी संस्था जैसे खाप इत्यादि का अत्यधिक योगदान रहा है। उत्तर भारत के राज्यों, जैसे– उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान इत्यादि में इनका प्रभाव देखा जा सकता है। खाप पंचायतों के अधिकतर, उच्च जाति के गोत्रों का समूह होता है। अलग गोत्र की अलग–अलग खाप पंचायत होती है। यहां अधिकतर पुरुषों को ही अधिक मात्रा में देखा जाता है, माहिलाओं का प्रवेश इन पंचायतों में निषेध होता है। हरियाणा में अधिकतर पंचायतें गांव की चौपाल और बैठकों इत्यादि में आयोजित की जाती है। इन सभी पंचायतों में मुख्य प्रधान गांव के

उच्च वर्ग के लोग पाए जाते हैं। ये पंचायतें समाज को नियमित रूप से चलाने का कार्य करती है जैसे, आपसी विवाद, विवाह–सम्बन्धी मुद्दे व हिंसाओं, इत्यादि महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर तथाकथित न्याय देती है। साथ ही जातीय व अन्तरर्जातीय विवाह सम्बन्धि विवादों में अपना निर्णय देती है (चौधरी 2004), ये पारम्परिक पंचायतें समाज में जैंडर आइडेन्टीटीज (Identities) को अधिक बढ़ावा देती है (चौधरी, 2014) ये स्वयंसेवी संस्था ना केवल समाज को प्रभावित करती है बल्कि राजनैतिक मुद्दों में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राजनैतिक दल चुनावी दौर में वोट बैंक हेतु, खाप सम्बन्धित मुख्य व्यक्तियों के सम्पर्क में आते हैं, क्योंकि ग्रामीण समाज में इनका अधिक प्रभाव होता है।

हरित क्रांति के पश्चात निम्न वर्ग की महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि हरित क्रांति के पश्चात् समाज के रहन–सहन व व्यवहार में अत्यधिक परिवर्तन देखे गये हैं। जिससे समाज की एक परिवर्तित हुई तस्वीर दृष्टिगोचर होती है। सामाजिक तौर पर संबंधों में भी बदलाव देखे गये हैं। निम्न जातियां व निम्न वर्ग भी समाज में अपनी पहचान बनाने लगे हैं। निम्न वर्गों के व्यवसाय में भी परिवर्तन देखे गये हैं। समाज में, हरित क्रांति पूर्व व कुछ हरित क्रांत के पश्चात् भी निम्न जातियों के साथ दुर्व्यवहार व शोषण किया जाता था, जिससे जजमानी प्रथा के अनुसार सभी जातियां समाज में अपने कार्य किया करती थी, लेकिन 1990 के दशक पश्चात् ग्रामीण समाज में निम्न वर्गों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाएं लगभग समाप्त हो गयी है। निम्न वर्गों के व्यवसाय में बदलाव आए हैं, निम्न वर्ग कृषक वर्ग के यहां कृषि के लिए दहाड़ी, मजदूरी आदि पर काम किया करते थे। बहुत सी महिलाएँ सब्जी बेचती है और अन्य बड़े घरों में साफ–सफाई इत्यादि के लिए जाती है। परन्तु कृषक वर्ग में भी निम्न कृषक वर्ग की महिलाएं स्वतंत्र नहीं

है। अपने कार्य करने को, क्योंकि वहां जाति विशेष का ध्यान रखा जाता है और कृषक वर्ग अपने घरों की महिलाओं को बाहर जाकर काम करने के लिए स्वीकृति नहीं करता है।

जातीय आधार पर महिलाओं की स्थिति

हरियाणा के ग्रामीण समाज की महिलाएं अत्यधिक परिश्रमी होती है। पुरुषों से अधिक कार्यों में भाग लेती है व घर, कृषि, पशुपालन, बच्चों को पालना इत्यादि में अधिक मात्रा में सहयोग देती है। सभी वर्गों, जातियों, धर्मों इत्यादि में महिलाएं पुरुषों से अधिक काम करती है। लेकिन उनका स्थान समाज में हमेशा पुरुषों से निम्न ही माना जाता है, इसके विपरीत समाज में कुछ ऐसे वर्ग भी सम्मिलित है जो अपने घरों की महिलाओं को बाहर जाकर काम करने की अनुमति नहीं देते हैं। उन वर्गों को अलग–अलग करके देखा गया है, जो इस प्रकार है–

उच्च वर्ग की महिलाएँ

ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, खत्री, कायशत (Kayastha) पंजाबी हिन्दु इत्यादि सभी जातियाँ उच्च वर्गों से आती है तथा इन वर्गों व जातियों की महिलाएँ घरों में रहती है, उन्हें बाहर जाने की अनुमति नहीं होती है। परन्तु समाज के अनुसार कुछ बदलाव देखे गये हैं, परन्तु अधिक मात्रा में नहीं।

कृषक वर्ग की महिलाएँ

जाट, अहीर, गुर्जर, बिषनोई और सैनी ये सभी जातियाँ कृषक वर्ग के अन्तर्गत आती है और कुछ समय पूर्व तक अर्थात् भूमि अधिग्रहण से पूर्व ये सभी महिलाएँ, परिवार के साथ खेतों में जाकर कार्य करती थी, परन्तु आर्थिक स्थिति बदलने से व अर्थव्यवस्था मजबूत होने से, इन सभी जातियों की

महिलाओं को भी बाहर जाकर बन्द करना कर दिया गया है। जिससे उनकी स्वतंत्रता पहले से सीमित हो गई है।

निम्न जाति/वर्ग से सम्बंधित महिलाएँ

निम्न वर्गों व जातियों में चमार (जाटव), बाल्मीकी, सांन्सी, बावरिया, खटीक, जुलाहा, मजहबी सिख इत्यादि शामिल है। हरित क्रांति पूर्व इन सभी जातियों की महिलाएं, बड़े जमींदारों, मध्यम किसानों इत्यादि व समाज में रखने वाले अन्य बड़े वर्गों की कृषि संबधित कार्यों व पशुपालन, घर की साफ सफाई इत्यादि कार्यों में अपना योगदान देती थी। परन्तु हरित क्रांति के पंचायतों 1990 के दशक में देश में अर्थव्यवस्था सुधारने से, निम्न वर्गों ने भी अपने व्यवसायों में परिवर्तन कर लिया, जिससे ये अब अधिकतर, प्राइवेट कम्पनियों, स्कूलों, अस्पतालों में गार्ड, सिनेमा घर व शॉपिंग, मॉल कॉम्प्लेक्स में नौकरी करने लगी हैं।

अतः हरित क्रांति के पश्चात् महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति में परिवर्तन देखे गये हैं। इन परिवर्तनों का प्रभाव समाज में रहने वाली सभी जातियों, वर्गों व धर्म से सम्बंधित महिलाओं में देखा जा सकता है। पहले की बजाय महिलाएं अधिक जागरूक व आत्मनिर्भर हुई है। व अपने अधिकारों के प्रति की जागरूक है। हरियाणा में महिलाओं की स्थिति में सुधार आया है। महिलाओं ने सरकारी नौकरी, प्राइवेट नौकरी में, और लघु उद्योग जैसे– सिलाई केन्द्र, पार्लर, दुकान इत्यादि में अपनी जगह बनाई है।

(ख) हरियाणा के ग्रामीण समाज में शिक्षा का स्तर व लिंगानुपात

हरियाणा के ग्रामीण समाज में निश्चित तौर पर शिक्षा के क्षेत्र में भी परिवर्तन आये हैं। हरित क्रांति के पश्चात् आर्थिक स्तर व अर्थव्यवस्था मजबूत होने से हरियाणा के ग्रामीण व समाज व कसबों में स्कूल, कॉलेजों की संख्या

में बढ़ोतरी हुई है, जिससे ग्रामीण समाज में रहने वाले छात्र–छात्राओं को शिक्षा प्राप्त करने में आसानी हो गई है। नई शिक्षा व्यवस्था व प्रणालियों को भी अपनाया गया है। जिससे, समाज आधुनिक बन सके, शिक्षा के क्षेत्र में न सिर्फ उच्च वर्गों का ही अधिक महत्व दिया गया है, बल्कि हरियाणा सरकार द्वारा निम्न वर्ग व जाति से सम्बंधित वर्गों को आधुनिक व निशुल्क शिक्षा प्रदान की गई है। जिससे निम्न वर्ग भी आत्मनिर्भर बन सके।

हरियाणा में हरित क्रान्ति के पश्चात् पुरुषों व महिलाओं के शैक्षिक स्तर को सारणी के माध्यम से देखा जा सकता है।

हरियाणा में हरित क्रांति के पश्चात् पुरुषों व महिलाओं का शैक्षिक स्तर

सारणी 1:1

संख्या	शैक्षणिक समूह	बादली	याकुबपुर	पाजौर	फतेहपुर	दादरी तोय	कुल संख्या
1	पुरुष शिक्षित	102 56.66%	94 49.73%	106 49.30%	109 53.69%	121 52.69%	532 52.20%
2	महिलाएँ शिक्षित	67 37.66%	82 43.38%	85 39.53%	62 30.54%	75 3233%	371 36.40%
3	पुरुष अशिक्षित	1 0.55%	2 1.05%	3 1.39%	5 2.46%	10 4.31%	21 2.06%
4	महिलाएं अशिक्षित	10 5.55%	11 5.82%	21 9.76%	27 13.30%	26 11.20%	95 9.32%
	कुल	180	189	215	203	232	1,019

हरित क्रांति के पश्चात् हरियाणा में लिंगानुपात

भारतीय समाज में जेंडर (लिंग अनुपात) मुद्दे बहुत समय से चर्चित रहे हैं। विशेषकर उत्तरी भारत के ग्रामीण समाज जेंडर विरोध को लेकर अधिक बदलाव नहीं आए हैं। हरियाणा प्रदेश विशेषकर पूरे भारत वर्ष में, लिंग अनुपात में सबसे निम्न स्तर पर होने की वजह से भी जाना जाता है। प्रारम्भ से सामाजिक संरचना का आधार पुरुष प्रधान समाज रहा है। जहां महिलाओं को अधिक पढ़ाया–लिखाया व अपनी इच्छा अनुसार जीवन सम्बन्धित मामलों पर निर्णय करने का अधिकार नहीं है। हरियाणा समाज के सभी वर्गों में महिलाओं को किसी ना किसी रूप में दबाया जाता है व उनकी इच्छाओं को मारा जाता है। अपनी स्वेच्छा से महिलाओं को कार्य करने की अनुमति नहीं होती है। अधिकतर महिलाओं को पुरुष प्रधान समाज द्वारा बनाये गये नियमों का पालन करना पड़ता है जो महिलाओं की स्वतंत्रता पर प्रश्नचिह्न लगाता है।

समाज में रहने वाला एक तबका जो शिक्षित है वह, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है तथा मागों व मुद्दों को लेकर सक्रीय है तथा समाज में रहने वाला पुराने व रूढ़िवादी विचारों का तबका, समाज में चले और और रहे पुराने नियमों व परम्पराओं के अनुसार कार्य करने पर जोर डालता है। हरियारणा के कुछ क्षेत्रों व कुछ जिलों में लिंग अनुपात का स्तर बढ़ा है, परन्तु वह **'ऊँट के मुँह में जीरे'** के समान है। लिंग अनुपात का स्तर लगातार कम होने के निम्नलिखित कारण है–

भ्रुण हत्या

हरियाणा के अधिकतर जिलों में गर्भ में ही जांच करा कर कन्या भ्रूण हत्या कर दी जाती है। हरियाणा, झज्जर, रेवाड़ी, मेवात, रोहतक, जींद इत्यादि जिलों में लिंग अनुपात सबसे कम है, जिससे समाज में लिंग अनुपात में महिलाओं व पुरुषों की संख्या में सन्तुलन बिगड़ गया है, और हरियाणा के

अधिकतर जिलों में, दूसरे राज्यों से विवाह हेतु लड़कियाँ खरीदने का चलन शुरू हो गया है। बिहार, यूपी, केरल, आसाम, बेस्ट बंगाल इत्यादि से लड़कियां खरीद के लाई जाती है। इससे समाज की पुरानी स्वयं की नस्ल व नस्ल की प्रकृति पर भी प्रभाव पड़ा है।

महिलाएं स्वयं सम्पति

हरियाणा समाज में गिरते लिग अनुपात का कारण यह भी है कि महिलाएं शादी के बाद भाई व पिता से सम्पत्ति में बराबर का अधिकार मांगने लगी है। जिसकी वजह से आपसी झगड़े, हिंसाएँ, कोर्ट केस, हत्याएं इत्यादि के मामले सामने आए हैं। इसीलिए हरियाणा में लड़कियों व महिलाओं को लेकर एक कहावत बोली गई है– **''वा बाण ऐ के जो भाईया का हक खागी''** (वो बहन की क्या जो भाईयों का हक ले गई) और कई जगह लड़कियां चुप रहती है क्योंकि, यदि उन्होंने सम्पत्ति में हक मांगा तो, उनसे जिन्दगी भर का रिश्ता खत्म कर लिया जाता है। इसीलिए बहुत सी महिलाएं यह सोच कर चुप रहती है कि परिवार की जरूरत तो पड़ती ही है।

प्रेम विवाह व अंर्तजातीय विवाह

हरियाणा में लगातार हो रही कन्या भ्रूण हत्या के पीछे एक कारण यह भी बताया जाता है कि लड़कियां पराया धन होती है। इन्हें दूसरे घर जाना है तथा पढ़ाई–लिखाई व शादी–ब्याह पर अधिक व्यय करना पड़ता है। कई बार सम्पत्ति संबंधि विवाद इत्यादि हो जाते हैं। तथा दूसरा यदि ऊँची जाति से सम्बन्ध रखने वाली लड़की, निम्न जाति से सम्बन्ध रखने वाले लड़के से शादी करती है तो यह गांव में रहने वाली पुरी जाति की इज्जत का सवाल होता है। जिसमें लड़की (इज्जत), निम्न वर्ग के लड़के के घर जायेगी तो उनकी सामाजिक गरिमा व सम्मान को ठेस पहुंचती है। जिसमें कई बार पाया गया है

कि यदि लड़का–लड़की भाग कर शादी कर भी लेते हैं तो उन्हें समाज में रहने नहीं दिया जाता और समाज के मुखियों द्वारा हत्या जैसे अपराध भी कर दिये जाते हैं। जिससे हरियाणा में ऑनर किलिंग के मामले सामने आते रहते है।

हरित क्रांति के पश्चात् व पिछले कुछ समय में थोड़ा बदलाव देखा गया है लेकिन यह बदलाव कहीं–कहीं छोटे स्तर पर दिखाई देता है।

हरित क्रांति के पश्चात् हरियाणा के झज्जर जिले के पांच गांवों का लिंग अनुपात सारणी के माध्यम से देखा जा सकता है।

हरियाणा में हरित क्रांति के पश्चात् पुरुषों व महिलाओं का शैक्षिक स्तर

सारणी 1:2

संख्या	लिंग अनुपात	बादली	याकुबपुर	पासौर	फतेहपुर	दादरी तोय	कुल संख्या
1	पुरुष	108 57.75%	101 51.79%	120 51.28%	132 60.27%	130 57.01%	591 55.59%
2	महिलाएँ	79 42.24%	94 48.20%	114 48.71%	87 39.72%	98 42.98%	472 44.40%
	कुल	187	195	234	219	228	1063

(ग) हरियाणा में महिलाओं की राजनीति व निजी स्वतंत्रता

हरियाणा में महिलाओं का योगदान हर क्षेत्र में रहा है। महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा महिलाओं के लिए आरक्षित सीटें ग्राम पंचायत व नगर निगम, पार्षदों, इत्यादि पदों को आरक्षित रखा गया, महिलाएं चुनाव भी लड़ती है और जीत भी जाती हैं, परन्तु उच्च पद का लाभ व

कार्यभार महिला के घर का पुरुषवर्ग ही संभालता है। विशेषतौर पर ग्रामीण समाज में पुरुषों का महिलाओं पर अधिक प्रभुत्व रहता है।

परिवारों में शक्ति सम्बन्ध

शक्ति सम्बन्धों को समझने के लिए यहां हमने फूको के नोशन ऑफ पावर (Foulct, Notion of Power) की सहायता ली है। ''फुको (Foulct) के अनुसार विश्व में हर जगह शक्ति सम्बंधों को देखा जा सकता है, चाहे वह विश्व का कोई भी स्थान, शहर व संस्था (परिवार) हो, शक्ति सम्बंध सभी जगहों में विद्यमान है। और निजी रूप में देखे जा सकते हैं।

फुको (Foulct) के इसी नोशन (Notion) की सहायता से हमने हरियाणा के ग्रामीण समाज के परिवारों के सम्बन्धों को समझने में सहायता ली है, परिवार में सभी पर के सदस्यों का निवास होताहै, जहां अधिक तौर पर देखा गया है कि सामाजिक संस्थाओं में भी व पारिवारिक संस्थाओं में भी पुरुषों का आधिपत्य व प्रभुत्व महिलाओं पर होता है। ''हरियाणा के झज्जर जिले के बादली गांव में परिवार में शक्ति सम्बंधों देखा गया'' दलित परिवार (अति सम्पन्न परिवार) में पूर्ण सरपंच के घर में चुनाव घर की बहु द्वारा लड़ाया गया था और चुनाव जीता गया, परन्तु महिला के पद का दावेदार घर के पुरुष थे, माहिलाएं चुनाव में भाग व सहभागी तो होने लगी परन्तु वे अपने पद पे कार्यरत नहीं है। उन्हें बाहर जाने की व स्वयं की इच्छा से कार्य की अनुमति नहीं है।

निष्कर्ष : हरित क्रांति के पश्चात् महिलाओं के जीवन में हर क्षेत्र में बदलाव देखे गये, परन्तु ग्रामीण समाज के कुछ हिस्सों में पुरानी परम्पराओं व मान्यताओं के आधार पर ही कार्य किए जाते हैं। महिलाओं को व्यवसाय इत्यादि में चुनाव के लिए कुछ विकल्प होते हैं जैसे– JBT, B.Ed. शिक्षिका

इत्यादि, इसके अलावा अन्य व्यवसायों व प्राइवेट जॉब को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता है, अध्यापकों के व्यवसाय को प्राथमिकता व सर्वोच्च माना जाता है। हरित क्रांति के पश्चात् निश्चित तौर पर महिलाओं के जीवन में आर्थिक–सामाजिक व राजनैतिक तौर पर बदलाव आये हैं। परन्तु महिलाओं के स्वयं से सम्बन्धित महित्वपूर्ण मुद्दे जैसे– विवाह, व्यवसाय, परिधान व फोन इत्यादि की स्वतंत्रता अधिक नहीं है। जातीय–अर्न्तजातीय विवाह सम्बन्धित हिंसाएं आज भी जारी है।

चयनित संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सेन्सस रिपोर्ट 2011, इज्ज्जर
2. कुमार, अजय (2012) ''खाप पंचायत'' अ सोसियो–हिस्टोरिकल ओव वियू'' इकानॉमिक एण्ड पोलिटिकल विकली, वॉल्यूम–XLVII No. 44 जनवरी 28
3. गुप्ता, दिपांकर (2005) ''वीदर द इंडियन वीलेज कल्चर एंड एग्रीकल्चर इन रूरल इंडिया इकॉनामिक एण्ड पॉलिटिकल विकली, फरवरी 19, 2005
4. चौधरी, (2013) ''खाप पंचायतों की प्रासंगिकता'' नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
5. चौधरी, प्रेम (1993) ''घई पार्टीशिपेशन लॉ इवॉल्यूशन वूमैन एण्ड वर्क इन 2–2 हिरयाणा इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, दिसम्बर 25
6. चौधरी प्रेम (1994) ''द वैल्ड वूमैन'' आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली

7. चौधरी प्रेम (2014) ''मैस्कुलीन स्पेस्स, रूरल मेल कल्चर इन नॉर्थ इंडिया'' इकॉनोमिक एण्ड पोलिटिकल वीकली, नवम्बर, 22

8. चौधरी प्रेम (2012) ''इनफलीकजन, एक्सेपटेनस एण्ड रेसीस्टेन्स कन्टेनिंग बोइलेंस ऑन वुमन इन रूरल हरियाणा'' इकानॉमिक एण्ड पॉलिटीकल वीकली, सितम्बर, 15

9. चौधरी प्रेम (1997) ''इनफोर्सिंग कल्चरल कोडस जेंडर एण्ड वाईलेंस इन नॉर्थ इंडिया'' इकानॉमिक एण्ड पॉलिटीकल वीकली, मई, 10

10. इंडियन ऐक्सप्रेस (2014), ''सट्रोम इन अ खाप : फस्ट वुमन मेमब्र एम्स टफ ब्रीज जेंडर थाईस'' दिल्ली, 25 अप्रैल

11. भल्ला शीला (1981) ''आइलैंड ऑफ ग्रोथ : ए नोट ऑन हरियाणा एक्सप्रीयन्स एण्ड सम पोसिबल इम्पलीकेशन'', इकोनॉमिक एण्ड पोलिटकल विकली, वॉल्यूम, 16, नं. 23

12. नीरता अहलावत (2009) ''मीसिंग ब्राइड इन रूरल हरियाणा : ए स्टडी ऑफ एडवर्स सेक्स रेशो, पावर्टी एण्ड एडीक्सन'' जनरल ऑपफ शोशल चेन्ज, मार्च

13. विवेक कुमार (2009), ''लोकेटिंग दलित वुमन इन द इंडियन कास्ट सिस्टम, मीडिया एण्ड वुमन ''एम्पावरमेन्ट'' जनरल ऑफ सोशल चेन्ज, मार्च 2009

14. अग्निहोत्री, सतीश बलराम (2000), सेक्स रेशो पेटेन्स इन द इन्डीयन पोपुलेशन, ए फ्रेश एक्सपलोरेशन, नई दिल्ली, सेप पब्लिकेशन्स

15. सेन्सीस ऑफ हरियाणा, (1991, 2001), सिरीज–7, डायरेक्टर ऑफ सैन्सिस ऑपरेशनस हरियाणा

16. द ट्रिब्युन, (2006), अगस्त 10, चण्डीगढ़

17. प्रेमी, एम.के (2001), 'द मीसिंग गर्ल चाइल्ड'' इकोनॉमिक एण्ड पोलिटकल विकली, मई, 26

18. दैनिक जागरण (2005), जनवरी 11, हरियाणा

19. दैनिक भास्कर (2001), अप्रैल 18, हरियाणा

20. कौर, रवीन्द्र (2004), ''एक्सेस रीजन मैरीजज : पावर्टी, फीमेल माइग्रेसन एण्ड द सेक्स रेशो'' इकोनॉमिक एण्ड पोलिटिकल विकली, जून 19